मॉरीशस का प्रवासी हिंदी साहित्य और अभिमन्यु अनत की कविताएँ

डॉ. आरले श्रीकांत लक्ष्मणराव

"जब कि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है,..."[1] साहित्य इतिहास की इस परिभाषा के अनुसार एक देश की जनता की चित्तवृत्तियों को तो समझा जा सकता है पर जब वही जनता प्रवास करते हुए अपनी भाषा और संस्कृति के साथ अन्य देशों में बस जाती हैं और तब वहाँ की सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियों का प्रभाव उन पर पड़ता है, उनकी चित्तवृत्तियाँ मिश्रित हो जाती हैं; ऐसे में इन चित्तवृत्तियों को किस देश की माना जाए?

भारतेत्तर देशों में हिंदी भाषा में लिखा जाने वाला साहित्य इसी प्रश्न से ग्रस्त है। इस साहित्य को 'प्रवासी' या 'आप्रवासी' साहित्य की संज्ञा दी गई है। जो भारतीय मूलनिवासी किसी कारणवश दूसरे देशों में गए, साथ में अपने धर्म, संस्कृति और भाषा को लेकर। वह लोग वहाँ अपनी व्यथा-कथा को अपनी भाषा में लिखने लगे तब उसमें दो संस्कृतियों का मेल होना स्वाभाविक है। वह भाषा के तौर पर एक होते हुए भी सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक विषयों के कारण भिन्न है। हिंदी साहित्य का अभिन्न अंग होते हुए भी देश और परिवेश की भिन्नता के कारण इसे 'प्रवासी हिंदी साहित्य' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। यह प्रवासी साहित्य जितना भारतीय हिंदी साहित्य से प्रभावित है उतना ही भारतीय हिंदी साहित्य इस प्रवासी साहित्य से प्रभावित है।

विश्व के विभिन्न देशों, अमेरिका, यूरोप, मॉरीशस आदि में हिंदी साहित्य लेखन हो रहा है। इन देशों के साहित्य में प्रेरणा-भूमि और परिस्थितियों के आधार पर भिन्नता होते हुए भी भारत-प्रेम, धर्म, संस्कृति, भाषा से प्रेम आदि की दृष्टि से उनमें साम्यता या अभिन्नता है। अमेरिका, यूरोप, रूस, जर्मनी, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों की तुलना में मॉरीशस के प्रवासियों की परिस्थितियाँ बहुत अधिक भिन्न हैं। अमेरिका आदि देशों में भारतीय प्रवासी जहाँ शिक्षा तथा नौकरियों के लिए स्वयं गए हैं वहीं मॉरीशस में भारतीयों को गिरमिटिया मज़दूर बनाकर ले जाया गया। जब स्वतंत्र भारत में किसानों, मजदूरों की परिस्थितियाँ सोचनीय हैं तो वहाँ बंदी बनाकर ले गए मज़दूरों पर क्या बीती होगी, सोचना असंभव है! मॉरीशस एक ऐसा देश है जिस पर पोर्तुगीज, फ्रांसीसी और अंग्रेजों का अधिकार रहा। भारतीय मजदूरों के खून-पसीने से इस देश को सुंदर बनाया गया। इस सुंदरता के पीछे छिपे अपने दुःख को उन्होंने अपनी भाषा में अभिव्यक्ति दी। लेखक अभिमन्यु अनत के शब्दों में, "इन भारतीय मजदूरों पर जब गोरे मालिकों के कोड़े और बाँसों के प्रहार होते थे तो इनकी आहें भी भोजपुरी और हिंदी में ही निकलती थीं।"[2] इस कथन से वहाँ के प्रवासी भारतीय मज़दूरों पर हुए शोषण और अत्याचार को समझा जा सकता है। वहाँ के इस लेखन का कारण यही वेदनाएँ हैं। यहाँ सुमित्रानंदन पंत की काव्य पंक्तियाँ स्मरण होती हैं-

'वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान
उमड़ कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान'

इसी प्रकार इन गिरमिटिया मज़दूरों का अपने देश से वियोग तथा गोरों के शोषण की आह से उसकी कविता आदि कवि की भाँति फूट निकली होगी। उन कवियों में अभिमन्यु अनत भी एक प्रमुख कवि के रूप में उभर कर सामने आते हैं। इनसे पूर्व मॉरीशस की हिंदी कविता का विकास हो चुका था।

मॉरीशस की हिंदी काव्य-यात्रा को तीन चरणों में विभाजित किया गया है- पहला चरण- 1913 से 35, जिसमें खड़ी बोली हिंदी काव्य भाषा बनी। क्योंकि इस काल के लेखकों का जन्म भारत में हुआ था और उनकी संपर्क भाषा हिंदी थी। दूसरा चरण- 1935 से 1968, इस काल के लेखक दूसरी पीढ़ी के थें, जिनका जन्म मॉरीशस में ही हुआ था। तीसरा चरण- 1968 से अद्यतन, जो मॉरीशस की स्वतंत्रता के पश्चात का समय है।

अभिमन्यु अनत सन् 1960 से ही अपना लेखन कार्य आरंभ करते हैं परंतु उसका विकास तीसरे चरण में देखने को मिलता है। वे सर्वाधिक सशक्त कवि होने के साथ-साथ अनेक कवियों का प्रेरणास्रोत भी रहे हैं। इस संदर्भ में उनकी तुलना महावीर प्रसाद द्विवेदी से करना अनुचित नहीं होगा। डॉ. कमल किशोर गोयनका के शब्दों में, "...मॉरीशस के अनेक युवा कवियों को काव्य-रचना के लिए प्रेरित करने के साथ उनकी कविताओं तथा काव्य-संग्रहों को प्रकाशित करवाया तथा उन्हें हिंदी का मंच प्रदान किया।"[3]

अभिमन्यु अनत एक ऐसे साहित्यकार हैं जिनकी अनुभूति की व्यापकता लेखन के विविध विधाओं के माध्यम से प्रकट हुई है। लेखक के साथ-साथ संपादक, निर्देशक, चित्रकार आदि रूपों में भी वे सामने आते हैं। कवि रूप में अनत जी की अनुभूति की प्रखरता देखने से ही बनती है। वे अपने समय के एक महत्वपूर्ण कवि हैं। उन्होंने अपने काव्य में पूर्वजों के धार्मिक, सांस्कृतिक पक्ष की अपेक्षा अंग्रेजों द्वारा हुए शोषण, दमन और अपमान के पक्ष को अभिव्यक्ति दी है। साथ ही स्वतंत्रता के बाद की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विसंगतियों को भी अपने काव्य का विषय बनाया है। ऐसे विषयों से युक्त कविताएँ पाँच काव्य-संग्रहों में संकलित हैं– 'नागफनी में उलझी साँसे' (1977), 'कैक्टस के दाँत' (1982), 'एक डायरी बयान' (1985), 'गुलमोहर खौल उठा' (1994) तथा 'लरजते लम्हें' (अप्रकाशित)।

अनत जी का कवि परिचय देते हुए शिवमंगल सुमन जी लिखते हैं कि "काव्य के रूप में उसका व्यक्तित्व अधिक सूक्ष्म और अंतर्भेदी बनकर अभिव्यक्त हुआ है। अतीत और वर्तमान के संबंध-सूत्रों की मूलग्राही पकड़ के कारण उसकी संवेदना गहरी और मार्मिक हो गई है।"[4]

अनत जी मॉरीशस की स्थापना के यथार्थ को व्यक्त करते हुए अपनी पहली कविता को 'पसीना किसी का, फसल किसी की' शीर्षक देते हैं। जिसमें मजदूरों के दुःख-दर्द को बयाँ किया गया है। जिन्होंने मॉरीशस को बनाया है, वही शोषण के शिकार बने हैं। आज उनके इस दर्दनाक इतिहास को सत्ताधारी शोषकों द्वारा विस्मृत कर दिया गया है। कवि को आज अपने पूर्वजों का स्मरण होता है और उनका हृदय द्रवित होकर उमड़ पड़ता है। 'वह अनजान आप्रवासी' कविता में लिखते हैं – "हिंदी महासागर की लहरों से तैर कर आयी / गंगा की स्वर-लहरी को सुन / फिर याद आ गया मुझे वह काला इतिहास / उसका बिसारा हुआ वह अनजान आप्रवासी देश के / अंधे इतिहास ने न तो उसे देखा था / न तो गूँगे इतिहास ने कभी सुनाई उसकी पूरी कहानी हमें / न ही बहरे इतिहास में सुना था / उसके चीत्कारों को / जिसकी इस माटी पर बही थी / पहली बूँद पसीने की / जिसने चट्टानों के बीच हरियाली उगायी थी / नंगी पीठों पर सह कर बाँसों की / बौछार बहा-बहाकर लाल पसीना / वह पहला गिरमिटिया इस माटी का बेटा / जो मेरा भी अपना था तेरा भी अपना।"[5]

कवि यहाँ अपने पूर्वजों से अपना संबंध जोड़ रहे हैं। वे सभी को याद दिला कर अपनों के प्रति प्रेम को जगाने का कार्य करते हुए दिखाई देते हैं। जिससे नई पीढ़ी अलिखित काले इतिहास से परिचित हो पाई। अनत जी इस बहरे इतिहास को सुनाने के लिए कविता रूपी हथोड़े का उपयोग करते हैं, "बहरों को सुनाने के लिए मैंने लोहार के हथोड़े का उपयोग किया है तथा मेरी कविताएँ 'चिल्लाहट' की कविताएँ हैं।"6 अन्य कवियों से अभिमन्यु अनत की भिन्नता के संबंध में डॉ. कमल

किशोर गोयनका जी लिखते हैं कि "अभिमन्यु से पूर्व मॉरीशस के हिंदी कवि भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का अख्यान कर चुके थे, परंतु अनत में संवेदना का घनत्व है और विस्फोट है। चीखता इतिहास और वर्तमान की भयानकताएँ हैं।"[7]

अपनी इन चिल्लाहट की कविताओं से अनत जी भूकंप लाना चाहते हैं, जिससे इतिहास के ऊपर की मिट्टी की परतों को हटाया जाएगा और प्रामाणिक इतिहास उजागर होगा, उन प्रथम मज़दूरों के 'अधगले पंजरों पर' के निशानों के रूप में, "भूकंप के बाद ही / धरती के फटने पर / जब दफनायी हुई सारी चीज़ें / ऊपर को आयेंगी / जब इतिहास के ऊपर से / मिट्टी की परतें धुल जायेंगी / मॉरीशस के उन प्रथम / मज़दूरों के / अधगले पंजरों पर के / चाबुक और बाँसों के निशान / ऊपर आ जायेंगे..."[8]

अपने पूर्वजों के प्रति संवेदनात्मक रूप से लिखते हुए कवि अतीत और भविष्य के इतिहास के यथार्थ को भी उजागर करता है। जिसका अतीत ही ठोस नहीं हो उसका वर्तमान और भविष्य कैसे ठोस हो सकता है? "अतीत की रीसती छत से / मेरा वर्तमान / ठोप-ठोप टपक रहा / भविष्य के / पेंदीहीन पात्र में"[9] ऐसे पेंदीहीन भविष्य का कोई अस्तित्व नहीं होता है। यहाँ कवि अपने वर्तमान के अस्तित्व और अस्मिता की चिंता करते हुए दिखाई देते हैं।

व्यवस्था द्वारा शोषण का सिलसिला अभी भी थमा नहीं है। शोषण रूपी पीठ के सलीब (सूली) की रस्सी उसके गोश्त के भीतर तक चली गई है। अर्थात् शोषण की मात्रा बढ़ती ही जा रही है। कवि 'रस्सी का निशान' कविता में इसे व्यक्त करता है, "मेरे पसीने के सैलाब में तैरकर / जब तुम्हारी उमस कम हो जाये / तो मेरी पीठ के सलीब को / ज़रा ढीला कर जाना / रस्सी मेरे गोश्त के / आधे इंच भीतर चली गई है।"[10]

इस प्रकार स्वतंत्रता के पश्चात् भी मजदूरों की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है। वे आर्थिक संकट के कारण 'भूख' से पीड़ित हैं। कुव्यवस्था के कारण बेरोजगारी की समस्या पनप रही है। कवि अपनों की इस भूख की पीड़ा को देखकर 'खाली पेट' कविता में ईश्वर से ही प्रश्न करता है, "तुमने आदमी को खाली पेट दिया / ठीक किया / पर एक प्रश्न है रे नियति / खाली पेट वालों को / तुमने घुटने क्यों दिए? / फैलाने वाला हाथ क्यों दिया?"[11]

इस प्रकार व्यवस्था द्वारा होने वाले शोषण का मार्मिक चित्रण उनकी कविताओं में दिखाई देता है। इसके साथ ही कवि अनत जी राजनेताओं की अमानवीयता, अराजकता पर भी प्रहार करने से नहीं चूकते हैं। 'नागफनी में उलझी साँसे' संग्रह की कविता 'दीमकों का जुलूस' में कवि ने राजनेताओं को दीमक बताकर उनके स्वभाव को उजागर किया है। वस्तु चाहे जितनी बड़ी हो दीमक उसे खोखला बना कर रख देता है। कवि व्यथित होकर कहता है कि इसी दीमक रूपी राजनेताओं के द्वारा हमें उखाड़ फेंकने का काम किया जा रहा है, "अपनी विस्तृत फैली जड़ों के बावजूद / हम उखड़ते चले जाते रहे हैं / हमारे ऊपर से गुज़र रहा है / दीमकों का लंबा जुलूस!!"[12]

उसी प्रकार 'कैक्टस के दाँत' काव्य-संग्रह की कविता 'पर कुतरेगा ज़रूर' में कवि राजनेताओं से आह्वान करता हुआ दिखाई देता है। सभी राजनेताओं को जनता के हितों से अधिक कुर्सी प्यारी होती है। कवि उस कुर्सी को ही कुतर देना चाहता है, "यह चूहा जो आज / मेरे नंगे पैरों को कुतर रहा है / कल तुम्हारे यहाँ पहुँचेगा / जूतों में सुरक्षित / तुम्हारे पैर उसे नहीं मिलेंगे / इसलिए वह उस कुर्सी को / धीरे-धीरे कुतरेगा / जिस पर तुम चिपके हुए हो।"[13]

राजनेता इस कुर्सी से चिपके रहकर समाज में आतंक फैलाने का कार्य कर रहे हैं। विकास के झूठे आश्वासनों से कुर्सी पर बैठ तो जाते हैं पर उन वादों को भूलाने के लिए समाज में स्थित विविध धर्मों में सांप्रदायिक दंगे करवाते हैं। जिससे समाज आतंकित महसूस करने लगता है। यही हमारी 'आधुनिक उपलब्धियाँ' हैं। इस आतंकवाद की भयावहता को उजागर करते हुए

कवि लिखता है कि "खुदा भाग रहा छुपाने को सर / इस शहर से उस शहर / आतंकवादी पीछे-पीछे नगर-नगर"14 जिससे राजनेता खुदा की भी सत्ता पलट कर रख देने की लालसा रखते और स्वयं खुदा बनते हुए दिखाई देते हैं। ऐसे समय का यथार्थ अनुभव करते हुए कवि व्यथित हो जाता है। ये समस्याएँ केवल कवि के प्रदेश तक सीमित नहीं हैं, पूरे विश्व पटल पर मँड़राते हुए दिखाई देती हैं। तब उनकी यह चिंता विश्व चिंता के रूप में उभर कर सामने आती है।

इन समस्याओं से निजात पाने का समाधान बताते हुए कवि अपने शत्रुओं को पहचान कर स्वयं की लड़ाई स्वयं लड़ने से ही मुक्ति मिलने की बात करता है, "अब आदमी को स्वयं उठना होगा। / स्वयं पार करना होगा / अमृत की बाढ़ के बाद की / उफनती नदी को / कोई दूसरा नहीं उठेगा तुम्हारे लिए / जिसको तुमने अमृत दिया / कुर्सी पर बैठाया वह भी पार नहीं करेगा / उफनती नदी को तुम्हारे लिए।"[15]

कवि इन समस्याओं से भयभीत नहीं होता है। उनसे लड़ने का माद्दा रखता है। किसी की मदद नहीं माँगता है। कवि को विनाश के बाद नव-निर्माण में प्रवृत्त होने की शक्ति अपने आँगन में आम के पेड़ पर रहने वाली चिड़ियों के गीतों से मिलती है, "उस चिड़िया के उन गानों से / एक गाना सुना दूँ तुम्हें / मेरे आँगन के आम के पेड़ पर जो / हर तूफान के बाद / घोंसला बनाती रही है / और गाया करती है एक ही रट में / मेरे ही वास्ते जैसे उन मधुर गीतों को।"[16] अप्रत्यक्ष रूप से इस कविता के माध्यम से कवि ने विश्व-मानव-मुक्ति की आकांक्षा रखते हुए मानव समाज को इन परिस्थितियों से लड़ने का बल प्रदान करने का कार्य किया है।

इस प्रकार अभिमन्यु अनत की कविताएँ उनके जीवन से एकरूप हैं। जब कविता और जीवन में अंतर समाप्त हो जाता है तब उससे सत्य, शिव और सुंदर की अभिव्यक्ति होती है। अनत जी की संपूर्ण कविताएँ समष्टि की कविताएँ हैं। कवि वैयक्तिकता को समाज के लिए समर्पित कर देते हैं। जीवन पर्यंत वे अपनी लेखनी को समाज से बाँधे रखें। सामाजिक प्रतिबद्धता और जन-कवि का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है! डॉ. कैलाश कुमारी सहाय के शब्दों में, "कवि की व्यथा और विवशता जब मानवीयता का संस्पर्श पा जाती है तब वह वैयक्तिकता और भौगोलिकता की सीमाएँ अपने-आप समाप्त होने लगती हैं। ऐसी स्थिति में कवि की लेखनी जो भी लिखती है वह उसका अपना होते हुए भी सबका हो जाता है।"[17]

अनत जी की अनुभूति की अभिव्यक्ति का माध्यम उनकी अपनी हिंदी भाषा है जो पाठकों के हृदय में स्थित भाव को सहज रूप से उत्पादित करने में सक्षम है। हिंदी के प्रति प्यार के कारण को स्वयं उन्हीं के शब्दों में देखना उचित होगा, "हिंदी यहाँ शोषितों की भाषा है, बहिष्कृतों की भाषा है, प्रेम-अस्मिता-संस्कृति-आंतरिक शक्ति और अधिकार की भाषा है, इसलिए मैं हिंदी को प्यार करता हूँ।"[18] इस प्रकार हिंदी कविता की वैश्विकता में अभिमन्यु अनत का महत्वपूर्ण योगदान है। वे अपनी अस्मिता और भाषा के लिए जीवन तक को समर्पित कर देने को तैयार हैं, "उतार लो मेरे कपड़े / खींच लो मेरे शाल / खाल तक नोच लो / कर दो मुझे चिथड़े-चिथड़े / मुझे सूली चढ़ा दो / मेरे तन-मन, मेरे कण-कण भी ले लें / ज़ब्त कर लो मेरी हर आशा / छिनने नहीं दूँगा, तुम्हें लेकिन / अपनी पहचान, अपनी भाषा।"[19]

सन्दर्भ:-

1. आचार्य रामचंद शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, काल विभाग से
2. डॉ. कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, पृष्ठ 167 (उद्धृत)
3. डॉ. कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, पृष्ठ 177

4. अभिमन्यु अनत, नागफनी में उलझी साँसे, (भूमिका से), पृष्ठ 5-6
5. http://www.hindisamay.com (गुलमोहर खौल उठा – काव्य-संग्रह से)
6. डॉ. कमल किशोर गोयनका, प्रवासी हिंदी साहित्य, पृष्ठ 182 (उद्धृत)
7. डॉ. कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, पृष्ठ 185
8. http://kavitakosh.org/kk/अधगले_पंजरों_पर_/_अभिमन्यु_अनत (अभिमन्यु अनत, नागफनी में उलझी साँसें काव्य-संग्रह से)
9. http://kavitakosh.org/kk/वर्तमान_/_अभिमन्यु_अनत (अभिमन्यु अनत, नागफनी में उलझी साँसें काव्य-संग्रह से)
10. http://kavitakosh.org/kk/रस्सी_का_निशान_/_अभिमन्यु_अनत (अभिमन्यु अनत, नागफनी में उलझी साँसें काव्य-संग्रह से)
11. उपरिवत
12. http://kavitakosh.org/kk/दीमकों_का_जलूस_/_अभिमन्यु_अनत (अभिमन्यु अनत, नागफनी में उलझी साँसें काव्य-संग्रह से)
13. अभिमन्यु अनत, कैक्टस के दाँत, पृष्ठ 96
14. http://kavitakosh.org/kk/आधुनिक_उपलब्धियाँ_/_अभिमन्यु_अनत (अभिमन्यु अनत, गुलमोहर खौल उठा काव्य-संग्रह से)
15. अभिमन्यु अनत, कैक्टस के दाँत, पृष्ठ 53
16. अभिमन्यु अनत, गुलमोहर खौल उठा काव्य-संग्रह से, पृष्ठ 86-87
17. डॉ. कैलाश कुमारी सहाय, प्रवासी भारतीयों की हिंदी-सेवा, पृष्ठ 228-229
18. डॉ. कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, पृष्ठ 170 (उद्धृत)
19. अभिमन्यु अनत, गुलमोहर खौल उठा काव्य-संग्रह से, पृष्ठ 62

सहायक प्राध्यापक,हिंदी विभाग,
ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट